शोध-चिंतन पत्रिका: विद्वानों द्वारा पुनरीक्षित ई शोध पत्रिका
अंक: 8; जनवरी-जून,2024

तात्त्विक दृष्टि से 'अंधायुग' गीति-नाट्य का समीक्षात्मक अध्ययन

डॉ॰ सिराजुल हक

शोध-सार :

धर्मवीर भारती आधुनिक हिंदी साहित्य जगत के मशहूर लेखक तथा सामाजिक विचारक थे। उन्होंने हिंदी साहित्य की विविध विधाओं पर लेखन-कार्य किया है, जिनमें कहानी, कविता, उपन्यास, निबंध, नाटक, एकांकी, आलोचना आदि चर्चित विधाएँ हैं। इसके अतिरिक्त धर्मवीर भारती अंधायुग साप्ताहिक पत्रिका के प्रधान संपादक भी थे। इस दृष्टि से धर्मवीर भारती हिंदी साहित्य के एक अनोखे व्यक्ति थे, जिनका योगदान हिंदी साहित्य के लिए एक अपरिसीम रहा है। इनका अंधायुग गीति-नाट्य एक उत्कृष्ट कृति है। इसमें महाभारत कालीन कथा के द्वारा आधुनिक कालीन भावबोध को नये आयाम दिया गया है। धर्मवीर भारती ने इस कृति के माध्यम से सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, ऐतिहासिक, राजनीतिक परिस्थितियों पर विचार किया है । इसमें महाभारत कालीन कौरव और पांडवों के युद्ध की विभीषिका, हत्यालीला, विविध उपदेश और अन्य कटु कला-कौशल आदि उजागर किए हैं । इन्हें विषयवस्तु का आधार बनाकर तत्कालीन परिस्थिति की विविध समस्याओं को दर्शाते हुए सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक सौहार्द को बरकरार रखने के लिए एक मिसाल पेश किया है। साथ ही अनागत उज्ज्वल भविष्य की कामना इस कृति का मुख्य उद्देश्य है।

बीज-शब्द : गीति नाट्य, *कथावस्तु, कल्पित पात्र, संवाद, वातावरण, भाषा-शैली, उद्देश्य*